

सं
वृद्धविद्यानलहृदय॥



सां

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
गदान् वज्रवृद्धिहर्तुमिह ॥ सर्वगानी नैव दमये अविद्याय वज्रक्राधर
यवजस्य पदा लघंग स्म ॥ यच्छ्रद्धा नृणाम् सत्त्वं दृढं स्थितं सर्वशक्ति
हं सर्वशक्त्या जितं ॥ सर्वसत्त्वविद्यापनकनं सर्वसत्त्वात्मा दनकनं
सर्वविद्याच्छ्रद्धा दनकनं सर्वविद्यास्तु हनकनं सर्वकर्मविधिं सनकनं

६

पनकर्मविद्यापनकनं सर्वग्रहात् सादनकनं सर्वग्रहविमाकुलकनं ॥ स
सर्वरूपापकर्षकनं सर्वविद्यामेशकर्मपनायकं असिद्धानां सिद्धि
कनं सिद्धानां चापि नाशनकनं सर्वकर्मपदं ॥ सर्वसत्त्वीनकुकीर्ण
निकं पृथिकं सर्वसत्त्वानीकृतनकनं सर्वसत्त्वानामाहनकनं ॥ ॐ नमो
मीशमहावली ॥ बुद्धानूलावाशाङ्गकुडावज्रपाणिः प्रपूज्यते ॥ ॥

साम

३

हा ॥ उ धन २ धिनि २ धन २ सर्ववद कलमावर्तय स्वाहा ॥ मम सर्व धा नमा
नय रुं रुं स्वाहा ॥ उ नमः सुमंग वडा धी सर्ववलमावर्तय स्वाहा ॥ मम सर्व धा
नमा नय रुं रुं स्वाहा ॥ उ नमः सुमंग वडा धी सर्ववलमावर्तय महावला
कि न धन. गतन. अचल. मं उलमाय अतिवद महाविमलन. अजि न कल
२ टिटिटिटि. पिंगल. गजवति निति महावल वडा कृष्ण लाय स्वाहा ॥ नमा
नल प्रयाय ॥ नमः चंद्रवद पा धय महाय रु सुना पतय. उ हन २ वद न

3

ध २ वद धन २ वद हन २ वद पच २ वद धन २ वद धानय २ वद दानू २
वद निंद २ वद हिंद २ वद रुं रुं ॥ नमः चंद्रवद पा नय महाका धय ॥ उ
रुल २ तिष्ठ २ वेध २ हन २ दह २ नमः रुं रुं ॥ हृदया प हृदयं मूल मं उ
सर्वपाप कृये कृत्वा सर्व दुःख विनाशने ॥ मना हि सर्व मं ग्रा धी सर्व श्री सम
ले कृतः ॥ उ य धी न कद्रिया कृत्वा न व ॥ य हगा युषः ॥ लक्ष्मी नमि विन व्वा
धन वन ध्वप ना रु मुखः ॥ को ना प्रिय रु न दूष्वा कू हं वध च उ पदू नाः ॥ ना पि

ॐ
अद्विष्टहृदयप्रार्थन॥

आदि

मा॥ जगदेकहिनाविद्यासैग्रमगानिधीशुल॥ ७ ॥ ऊर्गिपान
मिगादवीधमलिनीधनधायिनी॥ पन्निनीपन्नधनीवपन्न
मासनमासनी॥ ८ ॥ शुद्धरूपीमहानगाहमवर्धप्रभाक
नी॥ त्रिगामधीधनीदवीप्रह्लापूक्तकधनधी॥ १० ॥
निधनकूटमानूताधन्यागनधनप्रिया॥ ॥

न ३

॥ श्रेष्ठाशुकमहाभादीदिव्याहनक्षत्रविधी॥ ११ ॥ मात
नीसर्ववृद्धानीनक्षत्रधनधनधनी॥ शुभगाराविनीदवीरावाला
वविवर्जिनी॥ १२ ॥ वेनायकीविनगाचदीपिनीकुण्डली
॥ हिंदिनीसर्वलानीसफपागलआरही॥ १३ ॥ ब्रह्मधीवय
मागाचशुकनाद्रुक्कवाहिनी॥ सनखनीविष्णुलाजीचतुर्वर्ग

आदि
३

विह्वलिनी ॥ १४ ॥ तथा गती महान्मा. वक्षिहि धर्म धनिनी ॥ क
कर्म धन ठवनी विद्या विषय ह्याला इमं जली ॥ १५ ॥ वा धनी सर्वमा
लानी वा धंग कृगण्यनी ॥ धन्यादि मुक्ति संपन्नान् दया दय
हविनी ॥ १६ ॥ सर्वार्थ साधनी रक्षा स्त्री रूपामि न विक्रमा ॥ द
र्शनी वृद्ध मार्ग नी नष्ट मार्ग प्रदर्शनी ॥ १७ ॥ वागी ठवनी महा

१३

धर्म निरुपस्थि धात्री धनं ददा ॥ स्त्री रूप नि धी सिद्धा या गिनी या गमी
ठवनी ॥ १८ ॥ मना हनी महा क्रान्ति शुभं प्रियदर्शनी ॥ सार्थ
वाक् कृपा दृष्टि सर्व ता थ गता लकी ॥ १९ ॥ नमस्तु महा देवी
सर्व सत्त्वार्थ दायिनी ॥ नमस्तु गदिव्य रूपी च वसुधा नमस्तु ॥
२० ॥ अष्टाक्षरं नाम प्रिकाले यः पठेत् तं प्राप्नोति नियतं

आ
व

सिद्धिमिप्तिर्गुणमनात्रथं ॥ २१ ॥ यदहं नाकृतीपापं आनंदरस
कात्रधी ॥ तत्सर्वान्कुपयिष्येति स्म न धामनामहदकः ॥ २२ ॥ अथ
वाभीलसंपन्नाः सज्जानिसे स्म ग्राहवन् ॥ प्रियवदयवाक्कठ्वन्
पवानप्रियदर्शनः ॥ २३ ॥ विप्रकुप्रियकूलषूः आदयमपजा
यन ॥ अन्तर्हमीध्वने प्राप्ते प्रयायाग सुखावर्ति ॥ २४ ॥

४.

आ
ग

ॐ निवसुधनानामास्तान्वागकीर्तयन्ति समाप्ये ॥ ॥ ॥
यधर्माहं प्रहवाहं न कीर्तयामः ॥ कवदं वीचयानि शोध
प्रवीवादिमहाध्वनी ॥ ॥ ॥

५

ASHA ARCHIVES

1.250

31/3/11